माननीय मुख्यमंत्री, बिहार, श्री नीतीश कुमार के द्वारा दिनांक–15.05.2015 को कला संस्कृति एवं युवा विभाग के कार्यक्रम में दिया गया भाषण

मैं आलोचना करता नहीं हूँ, विचारवान लोग आपस में विभिन्न राय रखते हैं, स्वाभाविक है, लेकिन कुल मिलाकर देखिये आने वाली पीढ़ी को प्रेरित करने वाली ये चीजें होती है। दुनिया को फिर से ज्ञान देने वाली जगहें तो सब स्थल यहां है। तो हमारे लिए तो विरासत जरूरी है। बिहार के लिए तीन चीज आवश्यक है। बिहार के लोग, बिहार की मिट्टी और बिहार की विरासत, हमको तो इन्हीं तीनों को ध्यान में रखकर ही विकास का अपना रास्ता तय करना है और यही एक बिहार के विकास का अपना मॉडल है और कोई दूसरा मॉडल नहीं है। कोई कॉरपरेट घराने यहां आ जायेगें उससे बिहार विकसित होगा नहीं। हमारे बिहार के लोग जब आगे बढ़ेगें, हमारी, जो मिट्टी उपजाउ है इसमें तो सबकुछ है, उसका हम ठीक ढंग से उपयोग करेंगे, दुरूपयोग नहीं, ठीक ढंग से उपयोग करेंगे, पर्यावरण को समझते हुए और जो हमारी विरासत उससे प्रेरणा ग्रहण करते रहेंगे और उसपर नाज करते रहेगें तो बिहार को तरक्की से कौन रोक सकता है। कल भी बिहार शीर्ष पर था, फिर बिहार शीर्ष पर था इसको कोई रोक नहीं सकता है। और यहां आज हम एक कार्यक्रम में गए हुए थे। पांच साल का बच्चा, सात साल का बच्चा, बिलकुल, बगैर किसी शब्द या वाक्य विन्यास की त्रुटि के शिक्षा पर–उस बच्चे ने, अपना विचार व्यक्त किया और वह बच्चा नालन्दा जिला के एक गांव का था तो आप सोचिये कि, क्या चीज है इस बिहार में, इसकी मिट्टी में, कुछ

खासियत है। कई उतार चढ़ाव हमें देखने है, देखें हैं हमलोगों ने और देखना पड़ेगा लेकिन यह मिट्टी ऐसी है कि इसकी हस्ती कभी मिटेगी नही, इसके, हमें अपने इतिहास पर, अपने विरासत पर नाज करना चाहिए और हम वर्तमान को भी इस तरह से संवारे, विरासत को तो संजोये और वर्तमान को इस तरह से संवारे कि यह भी लोगों के लिए प्रेरणा हो। तो आज के इस अवसर पर, कला संस्कृति विभाग को पहले क्या समझता था, जब कोई सेक्ट्रेरी पर ऊंगलिया, कला संस्कृति विभाग को समझता था कि इनको संट किया जाये, कला संस्कृति विभाग का मंत्री कोई बन गया तो समझता था कि, बुझाता है कि क्या करेंगे। आज देखिये, कला संस्कृति विभाग कितना वाइभ्रेंट, आज जो भी आरकलॉजी के लोग थे, बैठे थे, अब वो काम कर रहे हैं। उनसे पुछिये कि उनको कितना अच्छा लगता है, उनके मंन में जॉब सटिसफैक्शन की फिलिंग हुई है। उनको भी लग रहा है कि हम कुछ कर सकते हैं, करना यानि बहुत से पहले इतिहास का हिस्सा थी इस विरासत के संरक्षण के लिए सचेष्ठ हैं और सब की दिलचस्पी होनी चाहिए और इसमें जन भागीदारी भी होनी चाहिए, लोगों को मालूम हो रहा है, और ये काम को आगे बढ़ाते जाईये, मेरी तो यही इच्छा है। और मैं समझता हूँ, जैसा हमने कहा है कि जो हमारे विकास का रास्ता है उसके मुख्य अवयव यह है और इन सब को संजोकर बेहतर बनाकर, हम विकास के रास्ते पर आगे बढ़ सकते हैं। इन्ही शब्दों के साथ, आप सब को, यहां उपस्थित हुए, मैं आप सब को धन्यवाद देता हूँ और कला संस्कृति विभाग को फिर से मैं बधाई देता हूँ अपने इस काम को जानिये कि इसका क्या महत्त्व है। थैंक्यू धन्यबाद।